Q. चाहमान अर्थात चौहान राजवंश का राजनीतिक इतिहास प्रस्तुत करें?

Ans:- उत्तर भारत के राजपूत वंशों का इतिहास काफी गौरवशाली प्रभावशाली एवं इतिहास प्रसिद्ध रहा है। इन राजपूत राजवंशों में चाहमान वंश की लोकप्रियता सबसे अधिक रही है। यह चौहान उत्तर भारत के हिन्दू राजाओं के आगे का कोई वंश है। इस वंश का संस्थापक वासुदेव चौहान थे। इतिहास विदों का मत है कि चौहानवंशीय जयपुर के सांभर तालाब के समीप के पुष्कर प्रदेश में और अहिच्छत्रपुर में निवास करती रहीं जिनके द्वारा शासित क्षेत्र सपादलक्ष कहलाता था। यह राजपूतों के प्रसिद्ध वंशों में से अन्यतम है। आज के राजस्थान तथा इसके आसपास के क्षेत्रों को संचालित किया। पृथ्वीराज रासो में चन्दबरदाई ने लिखा है कि जब परशुराम द्वारा क्षत्रियों के विनाश के पश्चात अधर्म, अत्याचार, पाप बढ़ गया तो सर्व समाज की रक्षा हेतु ब्रह्मा की आज्ञा से आबू पर्वत पर वशिष्ठ, गौतम, अगस्तमुनि इत्यादि ऋषियों ने यज्ञ प्रारम्भ किया। इसी यज्ञ की अग्निकुण्ड से चार वीर क्षत्रिय का जन्म हुआ - प्रतिहार, परमार, चौहान एवं चालुक्य। गुरु वशिष्ठ मुनि द्वारा इन चारों क्षत्रियों का जन्म अग्निकुण्ड से हुआ जिनमें चौहान (चाहमान) एक महान प्रतापी एवं कर्त्तव्यनिष्ठ वंश सिद्ध हुआ जिनका विवरण हम इस तरह से प्रस्तुत कर सकते हैं -

(सपादलक्ष)

① संस्थापक वासुदेव — वीर वासुदेव चौहान (चाहमान) वंश का संस्थापक था जो 551 ई० में राजगद्दी पर बैठा एवं शासन संचालन किया।

② अजयराज — वासुदेव के पश्चात अजयराज के शासनकाल (1105-1130 ई०) तक यद्यपि चाहमान-वंश में अनेक शासकों ने शासन किया, वे दुर्बल शासक थे अथवा प्रतीहारों के सामन्त रूप में शासन कर रहे थे।

③ अर्णोराज (1130-1150 ई०) - अजयराज का पुत्र एवं उत्तराधिकारी अर्णोराज था जिसे अनलदेव, आनाक व आना आदि भी कहा जाता है। अर्णोराज चाहमान-वंश का एक प्रतापी शासक था। इसने अनेक विजयों के द्वारा चाहमान साम्राज्य को शक्तिशाली बनाया।

Scanned with CamScanner

⑤ **विग्रहराज चतुर्थ (1150-1164 ई०) —** विग्रहराज चतुर्थ चाहमान-वंश का एक शक्तिशाली शासक था। उसके 11 अभिलेख प्राप्त होते हैं। जिनसे विषय में जानकारी प्राप्त होती है।

⑥ **पृथ्वीराज द्वितीय →**
चाहमान-वंश (1164-1177 ई०)-विग्रहराज के पश्चात उसके पुत्र अपरगांगेय ने कुछ समय शासन किया, किन्तु शीघ्र ही जगद्देव के पुत्र पृथ्वीराज द्वितीय (1164-1169 ई०) ने उसकी हत्या कर दी व स्वयं शासक बनकर 1169 तक शासन किया। फिर उसके चाचा सोमेश्वर ने 1169 ई० से 1177 ई० तक शासन किया।

⑦ **पृथ्वीराज तृतीय (1178-1192 ई०) —** सोमेश्वर के पश्चात उसका पुत्र पृथ्वीराज चाहमान-साम्राज्य राजसिंहासन पर आसीन हुआ। पृथ्वीराज इस वंश का सर्वाधिक प्रतापी राजा प्रमाणित हुआ जिसकी उपलब्धियों को हम इस प्रकार से अध्ययन कर सकते है—

(i) **पृथ्वीराज की नीति :—)** पृथ्वीराज ने ~~1880~~ 1180 ई० के लगभग शासन की बागडोर अपने हाथों में ली शीघ्र ही उसे अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ा अनेक शक्तिशाली राजा उसके प्रबल प्रतिद्वन्दी थे, अतः इसके लिए आक्रामक नीति को अपनाना अत्यन्त आवश्यक था। इसके अतिरिक्त

Scanned with CamScanner

युवा पृथ्वीराज अत्यन्त महत्वकांक्षी था, अत: उसने शासक बनते ही आक्रामक नीति का पालन किया व अपनी मृत्यु तक इस नीति पर चलता रहा।

(ii) नागार्जुन के विद्रोह का दमन :- विग्रहराज चतुर्थ के पुत्र नागार्जुन ने पृथ्वीराज के विरुद्ध 1182 ई० में विद्रोह किया व गुड़पुर पर अधिकार कर लिया। नागार्जुन को प्रारम्भ में सफलता प्राप्त हुई व उसने कुछ दिन में अजमेर पर शासन भी किया।

शीघ्र ही पृथ्वीराज ने कदम्बवास के नेतृत्व में विशाल सेना इस विद्रोह को दबाने के लिए भेजी। नागार्जुन ने स्वयं को दुर्ग में सुरक्षित रखना चाहा, किन्तु शीघ्र ही उसे अपने प्राणों की रक्षा के लिए भागना पड़ा।

नागार्जुन के सैनिक सम्बन्धी बन्दी बनाए गए नागार्जुन के सैनिक यद्यपि देवमट्ट के नेतृत्व में युद्ध करते रहे, किन्तु शीघ्र ही उन सबको मौत के घाट उतार दिया गया।

(iii) मण्डानक-विजय — 1182 ई० में मण्डानकों ने विद्रोह किया इनके राज्य में भिवानी तहसील, रिवाड़ी तहसील व अलवर के कुछ भाग आते थे। पृथ्वीराज ने इन पर विजय

Scanned with CamScanner

प्राप्त कर इस विद्रोह को दबाया।

(iv) चन्देलों से युद्ध :- पृथ्वीराज तृतीय का समकालीन चन्देल शासक परमर्दी था। 'पृथ्वीराजरासो' से ज्ञात होता है कि चाहमान शासक ने चन्देलों की राजधानी पर विजय प्राप्त की, जिसमें चन्देल शासक की ओर से आल्हा आल्हा व ऊदल ने भी युद्ध में भाग लिया था।

पृथ्वीराज ने चन्देलों पर विजय प्राप्त की इसकी पुष्टि मदनपुर अभिलेखों से होती है। पृथ्वीराज चन्देल - साम्राज्य पर अधिक समय तक अधिकार न रख सका व परमर्दी ने कुछ समय पश्चात् पुनः अधिकार कर लिया।

(v) गहड़वालों से सम्बन्ध :- पृथ्वीराज चौहान का समकालीन गहड़वाल शासक जयचन्द्र था। इनके पारस्परिक सम्बन्धों के विषय में 'पृथ्वीराजरासो' से पर्याप्त प्रकाश पड़ता है।

इस ग्रन्थ में पृथ्वीराज के द्वारा जयचन्द्र की पराजय किस जाने का उल्लेख मिलता है। जयचन्द्र भी एक शक्तिशाली शासक था, उसने अनेक युद्धों में विजय प्राप्त कर राजसूय यज्ञ का आयोजन किया व इसी अवसर पर अपनी पुत्री संयोगिता के स्वयंवर की भी व्यवस्था की। चाहमान शासक पृथ्वीराज को

Scanned with CamScanner

इसमें आमन्त्रित नहीं किया गया था, किन्तु पृथ्वीराज ने संयोगिता का अपहरण कर लिया फलतः दोनों में वैमनस्य और भी बढ़ गया।

डॉ० दशरथ शर्मा ने स्वयंवर की घटना की ऐतिहासिकता में संदेह व्यक्त किया है। जयचन्द्र व पृथ्वीराज के मध्य किसी युद्ध होने का निश्चित प्रमाण उपलब्ध नहीं है।

जयचन्द्र व पृथ्वीराज के मध्य इस शत्रुता का लाभ मुहम्मद गोरी को हुआ।

(vi) तुर्कों से संघर्ष :- ~~मोहम्मद~~ मुहम्मद गोरी 1173 ई० में गजनी का गवर्नर नियुक्त हुआ था। 1175 ई० में उसने भारत का प्रथम अभियान किया तथा गुजरात पर आक्रमण कर वहां लूट-पाट की। 1181 ई० में गोरी ने सियालकोट में एक दुर्ग का निर्माण कराया तथा 1186 ई० में उसने पंजाब पर अधिकार कर लिया।

यद्यपि 'हम्मीर महाकाव्य' व 'पृथ्वीराज विजय' में उल्लेख है कि पृथ्वीराज ने लगभग सात बार गोरी को पराजित किया था, किन्तु इस वर्णन को प्रमाणित स्वीकार नहीं किया जा सकता।

Scanned with CamScanner

(अ) <u>तराइन का प्रथम युद्ध (1191 ई०)</u> → गौरी व पृथ्वीराज की सेनाओं के मध्य प्रथम युद्ध 1191 ई० में तराइन के मैदान (थानेश्वर से 14 मील दूर) में हुआ था।

गौरी सरहिन्द पर अधिकार कर लेने के पश्चात आगे बढ़ा तो पृथ्वीराज ने तराइन के मैदान में उसका सामना सामना करने का निर्णय किया।

गौरी की आक्रमण की विभिषता एवं अत्याचार का वर्णन चन्द्रराज (दिल्ली के गवर्नर गोविन्दराज का पुत्र) ने इस प्रकार किया।

"गौरी ने उसको लूटा एवं जला दिया, नारियों का अपमान किया व उन सबकी दुर्दशा कर दी। अनेक राजपूत घराने उनके सामने नष्ट हो गए या भाग गए।"

इस वर्णन को सुनकर दुखी पृथ्वीराज ने तुरन्त गौरी का तराइन के मैदान में सामना किया। पृथ्वीराज की सेना के भीषण आक्रमण व विशाल संख्या के समक्ष गौरी के सैनिक टिक न सके। शीघ्र ही गौरी की सेना पराजित होकर भागने पर विवश हुई। गौरी भी घायल हो गया, किन्तु कारण पीछा न किया, किन्तु यह उसकी बहुत बड़ी भूल थी।

किन्तु किसी प्रकार युद्ध क्षेत्र से भागने में सफल हो गया। पृथ्वीराज ने भागती हुई तुर्क सेना का राजपूती आन के कारण पीछा न किया, किन्तु यह उसकी बहुत बड़ी भूल थी। उसे गोरी की सेना का पीछा करके उसे पूर्णतः नष्ट कर देना चाहिए था। पृथ्वीराज को इस गलती का परिणाम शीघ्र ही भुगतना पड़ा।

(ब) तराइन का द्वितीय युद्ध (1192 ई०) ⇒ गोरी अपनी इस अपमानजनक पराजय को भूल न सका। उसने पुनः युद्ध की तैयारी की व गजनी से एक लाख तीस हजार चुने हुए घुड़सवारों के साथ भारत की ओर प्रस्थान किया व पुनः तराइन मैदान तक पहुँचकर पृथ्वीराज को सन्देश भिजवाया कि वह इस्लाम-धर्म को स्वीकार कर ले, किन्तु पृथ्वीराज प्रत्युत्तर में सेना सहित उसके सम्मुख जा पहुँचा। पृथ्वीराज ने गोरी को पत्र लिखकर सूचित किया कि यदि वह वापस लौट जाए तो वह गोरी को हानि नहीं पहुँचाएगा।

गोरी ने धूर्तता से काम लिया। उसने पृथ्वीराज को कहलवाया कि वह अपने भाई की आज्ञा से भारत पर आक्रमण करने आया है, अतः उसे आज्ञा लेना आवश्यक है। तथा मैं अपने भाई के पास सन्देश भेज रहा हूँ

इस पत्र के प्राप्त होने पर पृथ्वीराज की सेना विश्राम करने लगी तब गोरी ने अचानक उस पर आक्रमण कर दिया।

पृथ्वीराज की सेना में अचानक हुए इस आक्रमण से भगदड़ मच गयी, किन्तु पृथ्वीराज ने स्थिति को नियंत्रण में रख कर गोरी को पीछे हटने पर विवश किया।

गोरी ने पुनः कूटनीति से कार्य किया व अपनी सेना को कई भागों में विभाजित कर दिन निकलने से पूर्व ही आक्रमण कर दिया। यद्यपि राजपूत सेना ने भयंकर युद्ध किया, किन्तु उन्हें पराजित होना पड़ा।

पृथ्वीराज को बंदी बनाया गया तथा एक लाख भारतीय सैनिक मारे गए। पृथ्वीराज की भी बाद में हत्या कर दी गयी।

(vii) विद्वानों का आश्रयदाता :- पृथ्वीराज के राज दरबार में अनेक विद्वान रहते थे, जिनमें पृथ्वीराजरासो का रचयिता चन्दबरदाई, जयानक, जनार्दन, विद्यापति आदि उल्लेखनीय हैं।

(च) हरिराज :- पृथ्वीराज की मृत्यु के पश्चात् चाहमान-वंश का अन्त निकट आ गया था, यद्यपि उसके भाई हरिराज के 1194 ई० तक जीवित होने के प्रमाण मिलते हैं। उसने अजमेर पर पुनः अधिकार करके कुछ समय तक शासन किया, किन्तु

Scanned with CamScanner

उसने जब दिल्ली पर अधिकार करने का प्रयत्न किया, तो मुसलमानों से हुए युद्ध में वह मारा गया। इस प्रकार चाहमान - वंश का अंत हो गया।

किसी भी वंश का उत्थान एवं पतन तो प्रकृति का शाश्वत नियम है। चाहमान वंश का इतिहास भी इससे अछूता नहीं है। वासुदेव द्वारा स्थापित इस वंश में अनेकों शासक हुए जिन्होंने समाज - राष्ट्र की रक्षा से सेवा की। पृथ्वीराज-चौहान इस वंश का ज्वलंत उदाहरण है जिन्होंने अपनी वीरता की अमिट छाप छोड़कर इतिहासप्रेमियों को युगयुगान्तर तक इस वंश की वीरगाथा सुनने-सुनाने का अवसर प्रदान किया। अतः क्षत्रियों (राजपूतों) के इतिहास में ही नहीं भारत के इतिहास में अपने इस चाहमान का नाम स्वर्णअक्षरों में अंकित किया है।

Scanned with CamScanner